DAT 28.10.24
PAGE No. 1

Tender Heart High School, Sec. 33-B, CHD.

कक्षा - चौथी शिक्षिकाएँ - रोमा रानी एवं सुमन शर्मा
विषय - हिंदी साहित्य (पाठ-9 'टीले का पत्थर') शेष भाग --
पुस्तक - नवतरंग - 4

प्यारे बच्चो!

सुप्रभात।

पाठ-9 'टीले का पत्थर' हिंदी साहित्य की पुस्तक नवतरंग-4 के पृष्ठ-65 पर दिए शेष भाग को पढ़ेंगे।

सब बच्चे अपनी पुस्तक का पृष्ठ-65 खोलें साथ ही अभ्यास-पुस्तिका भी खोलकर रख लें। पढ़ते समय मैं पाठ के बीच में से कुछ प्रश्न पूछती जाऊँगी। अतः पाठ को ध्यान से पढ़ना व समझना अति आवश्यक है। प्रश्नों के उत्तर लिखने के लिए तीन मिनट का समय लेंगे।

बच्चो! पिछले सप्ताह आपने पाठ में पढ़ा कि मूर्तिकार की बेटी अपने पिता के काम में हाथ बँटाना चाहती है लेकिन मूर्तिकार अपनी बेटी को घर भेज देते हैं। वे कहते हैं - "तू घर जा। तेरी माँ राह देखती होगी।"

पर बेटी ने तो ठान ही लिया था कि वह पिता की मदद करेगी। वह भी हाथ में छेनी लेकर जुट गई। पिता के कहे अनुसार पत्थर में बेल-बूटे बनाने लगी। अपने साथियों को उसने कुछ छोटे-छोटे पत्थर ढूँढ़कर दे दिए। मूर्तिकार उन बच्चों को भी साथ-साथ पत्थर तराशना सिखाता रहा। साँझ होने पर पिता और पुत्री घर लौट आए।

अगले दिन सुबह जब मूर्तिकार अपने औज़ारों का थैला लेकर चलने लगा, तो बेटी और उसके साथी भी चलने को तैयार हो गए।

इस तरह पिता और पुत्री हर रोज़ सुबह से शाम तक उस सफ़ेद पत्थर को तराशने में लगे रहते थे। अन्य बच्चे भी मूर्तिकला के गुर सीखते हुए अपने-अपने पत्थरों को तराशकर कुछ नया बनाने में जुटे थे। दिन गुज़रे, हफ़्ते गुज़रे और महीना गुज़र गया। वहाँ से गुज़रने वाले लोग पिता और पुत्री को लगन से काम करते हुए देखते।

(पृष्ठ-1)

Scanned with CamScanner

DATE 28.10.24
PAGE No. 2

कक्षा - चौथी अध्यापिकाएँ - रीमा रानी, सुमन शर्मा
विषय - हिंदी साहित्य (पाठ-9 'टीले का पत्थर')

बच्चो! मूर्तिकार की बेटी अपने पिता के कहने पर हाथ में छेनी से पत्थर में बेल-बूटे बनाती तथा उसके पिता भी बच्चों को पत्थर तराशना सिखाते। पिता-पुत्री प्रतिदिन अन्य बच्चों के साथ मूर्तिकला के गुर सीखते-सिखाते। इस प्रकार हफ़्ते, दिन, महीने गुज़रे। एक दिन वह मूर्ति बनकर तैयार हो गई।

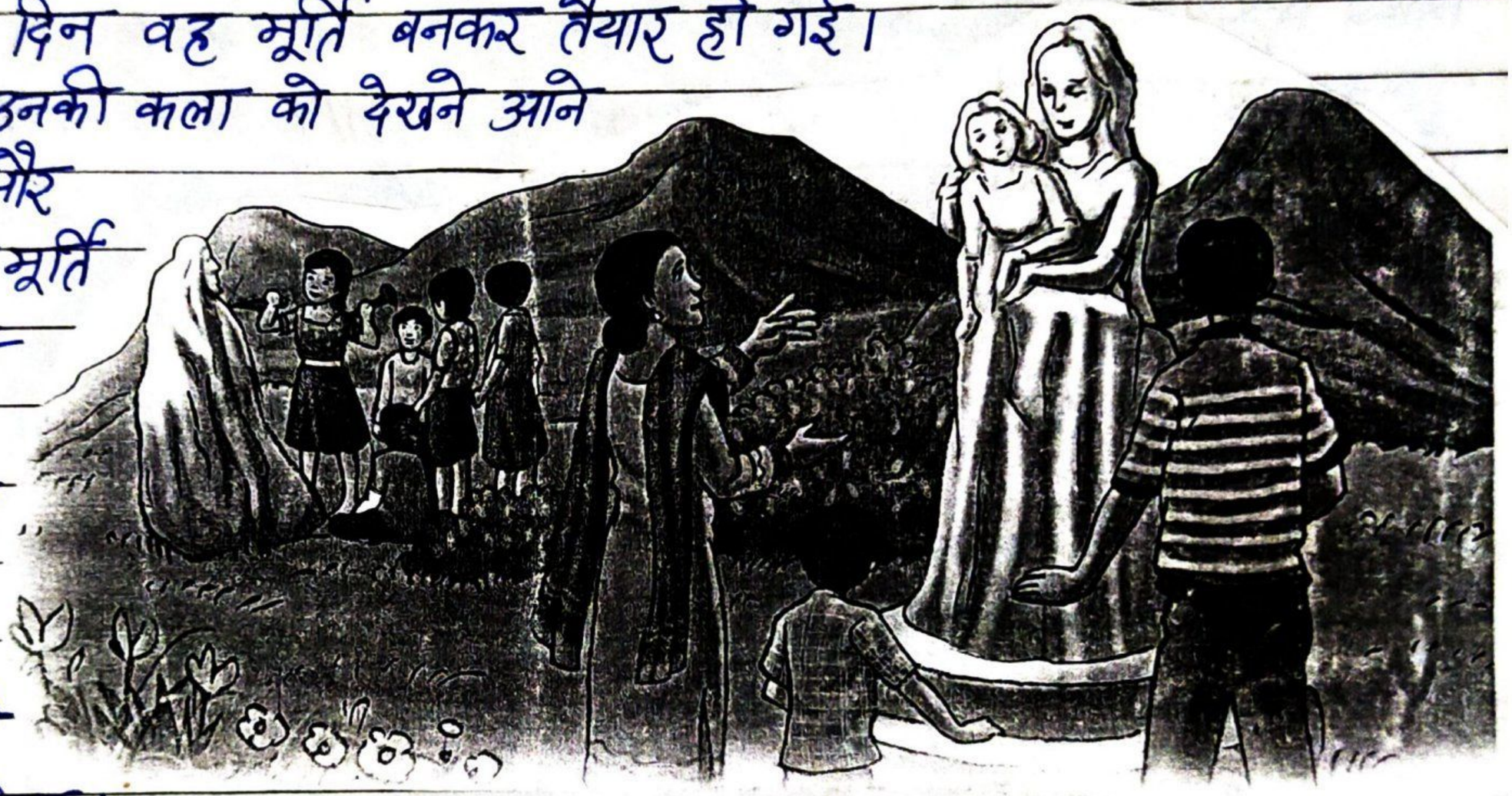

लोग उनकी कला को देखने आने लगे और उन्होंने मूर्ति के आस-पास घास और सुंदर फूलों के पौधे लगा दिए।

वह टीला उस गाँव की पहचान बन गया और सरपंच द्वारा टीले तक पहुँचने के लिए सड़क भी बनवा दी।

बच्चो! यहाँ अब मैं आपसे प्रश्न पूछ लेती हूँ। पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखने के लिए आप तीन मिनट का कालांश लेंगे।

प्रश्न-1 पत्थर पर बेल-बूटे कौन बनाने लगा?
प्रश्न-2 छोटे-छोटे पत्थर ढूँढ़कर किसने किसको दिए?
प्रश्न-3 पिता-पुत्री हर रोज़ सुबह क्या कार्य करने में लगे रहते?
प्रश्न-4 गाँव में टीले तक पहुँचने के लिए सड़क किसने बनवाई।

बच्चो! आपका अंतराल का समय समाप्त हो गया।

पूछे गए प्रश्नों के उत्तर इस प्रकार हैं:-
उत्तर-1 मूर्तिकार की बेटी पत्थर में बेल-बूटे बनाने लगी।
उत्तर-2 मूर्तिकार की बेटी ने छोटे-छोटे पत्थर ढूँढ़कर अपने साथियों को दिए।

(पृष्ठ-2)

Scanned with CamScanner

DAT 28.10.24
PAGE No. 3

कक्षा - चौथी अध्यापिकाएँ - रोमा रानी, सुमन शर्मा
विषय - हिंदी साहित्य (पाठ-9 'टीले का पत्थर')

उत्तर-3. रोज़ सुबह पिता-पुत्री उस सफ़ेद पत्थर को तराशने में लगे रहते जो एक टीले पर था।

उत्तर-5. गाँव के टीले तक पहुँचने के लिए सड़क सरपंच ने बनवा दी थी।

अब बच्चो! मैं पाठ को आगे पढ़ती हूँ। सब बच्चे ध्यान से पाठ को पढ़ेंगे व सुनेंगे। बच्चो! जब वह मूर्ति बनकर तैयार हो गई तो गाँव के बहुत से लोग अब उस मूर्तिकला को देखने में रुचि लेने लगे। अब वे भी मूर्तिकार से पत्थर पर नक्काशी करना सीखने लगे। धीरे-धीरे उस गाँव में बहुत-से मूर्तिकार तैयार हो गए। वह गाँव पत्थर की सुंदर मूर्तियों और सजावटी वस्तुओं के लिए जाना जाने लगा। दूर-दूर से लोग वहाँ मूर्तियाँ और अन्य सामान खरीदकर ले जाने लगे। इस प्रकार एक कलाकार की कला ने सारे गाँव में खुशहाली ला दी।

बच्चो! यह पाठ यहाँ समाप्त हुआ। अब मैं आपको गृहकार्य करने को दूँगी।

गृहकार्य :-

सब बच्चे पृष्ठ-66 पर लिखे शब्दार्थ को तथा पृष्ठ-67 पर पाठ बोध के प्रश्न 1, 2 को अपनी अभ्यास-पुस्तिका में तथा 3, 4 को पुस्तक पर ही लिखेंगे।

* अभिभावक बच्चों के कार्य में सहायक सिद्ध हों।

धन्यवाद।

(अंतिम पृष्ठ - 3)

Scanned with CamScanner